प्रेस विज्ञप्ति

9 दिसंबर से प्रारंभ होगी, इंडिया वॉटर इम्पैक्ट समिट
देश–विदेश के विशेषज्ञ करेंगे भागीदारी
इस वर्ष की थीम नदी संसाधन निर्धारण

सेंटर फॉर रिवर बेसिन मैनेजमेंट एंड स्टडीज (सी–गंगा) और नेशनल मिशन फॉर क्लीन गंगा के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित इंडिया वॉटर इम्पैक्ट समिट 9 दिसंबर से प्रारंभ होगा। पानी पर केंद्रित विश्व के कुछ चुनिंदा आयोजनों में इंडिया वॉटर इम्पैक्ट समिट शामिल है, इस वर्ष महामारी और अंतर्राष्ट्रीय यात्राओं के नियमों में होने वाले त्वरित परिवर्तनों को देखते हुए यह शिखर सम्मेलन मिश्रित रूप से ऑनलाइन और ऑफलाइन सम्पन्न होगा। ऑफलाइन सत्र दिल्ली में आयोजित किये जाएंगे, जिनमें दूरस्थ क्षेत्रों के वैज्ञानिक, विशेषज्ञ, प्रशासकीय अधिकारी और शोधार्थी ऑनलाइन शामिल हो सकेंगे। शिखर सम्मेलन का विषय नदी संसाधन निर्धारण : क्षेत्रीय स्तर पर योजना और प्रबंधन रखा गया है।

सी–गंगा के संस्थापक प्रमुख डॉ विनोद तारे ने बताया कि इंडिया वॉटर इम्पैक्ट समिट एक ऐसा सम्मेलन है जहां जल प्रबंधन और जल संरक्षण के लिए विज्ञान, प्रबंधन और प्रशासन तीनों के विशेषज्ञ एक मंच साझा करते हैं। इस मंच पर जल से जुड़े हर पहलू पर विस्तार से विमर्श और चिंतन होता है। नेशनल मिशन फॉर क्लीन गंगा के डायरेक्टर जनरल राजीव रंजन मिश्रा ने बताया कि नदी के संसाधनों का निर्धारण अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बारे में अब तक ज्यादा चर्चा नहीं हुई है। नदी विज्ञान को जानने और समझने वाले अब इस विषय को सर्वाधिक महत्व दे रहे हैं। बहुत सोचने और समझने के बाद हमने इस वर्ष की थीम के लिए उक्त विषय चुना है।

सम्मेलन में नार्वे, जापान, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, समेत यूरोपियन यूनियन और ब्रिक्स (ब्राजील, रशिया और चीन) राष्ट्र के प्रतिनिधि शामिल होंगे। इन देशों के साथ सी–गंगा जल प्रबंधन और जल संरक्षण संबंधी कुछ क्षेत्रों में साथ मिलकर काम करने के लिए सहमति प्रदान कर चुका है। छह दिवसीय शिखर सम्मेलन पांच ट्रैक में सम्पन्न होगा।

ट्रैक ए – इस ट्रैक में नदियों से मिलने वाली सेवाओं और वस्तुओं के मूल्यांकन और नदी के संसाधनों की गणना, मूल्यांकन, नदी संसाधन निर्धारण और प्रबंधन के लिए आवश्यक वैज्ञानिक विधियों, तकनीकी, नीतियों और कार्यविधियों पर चर्चा होगी।

ट्रैक बी– इस ट्रैक में अपशिष्ट (विशेषकर कीचड़) के प्रबंधन और उसके प्रबंधन से जुडे वित्त और अर्थशास्त्र पर चर्चा होगी, साथ ही कृषि, वाटर रिसाईकिल और वॉटर ट्रेडिंग के वित्तिय पहलुओं और चक्रिय अर्थशास्त्र पर विमर्श होगा।

ट्रैक सी– इस ट्रैक में नई तकनीक और नए **आविष्कारों** और रचनात्मक समाधानों पर बात होगी जैसे डिजिटल वॉटर, अपशिष्ट जल उपचार का विकेंद्रीकरण, जल विद्युत **ऊर्जा**, पेयजल आपूर्ति, नौका परिवहन, ग्रीन हाईड्रोजन, कचरे से हाईड्रोजन का निर्माण जैसे विषयों पर विभिन्न विशेषज्ञ अपनी बात रखेंगे।

ट्रैक डी– इस ट्रैक में विभिन्न राष्ट्रों के प्रतिनिधि सदन को संबोधित करेंगे जैसे ऑस्ट्रेलिया के प्रतिनिधि जल अधिकार के बारे में, नार्वे के प्रतिनिधि कीचड़ प्रबंधन और समुद्री प्रदूषण पर, जापान के प्रतिनिधि शहरी जल और अपशिष्ट जल प्रबंधन पर संबोधित करेंगे। अमेरिका के विशेषज्ञ डिजिटल वॉटर पर, ब्रिटेन के विशेषज्ञ जल अर्थव्यवस्था पर सदन को संबोधित करेंगे।

ट्रैक ई– इस ट्रैक में मुख्यतः नीति, कानून और प्रशासकीय चुनौतियों और समाधानों पर चर्चा होगी। नदियां किसी राष्ट्र की सार्वजनिक संपत्ति होती है, एक सार्वजनिक और प्राकृतिक स्रोत में मानवीय हस्तक्षेप को रोकना या सीमित करना लोकतांत्रिक देश में आसान नहीं होता। सार्वजनिक गतिविधियों में व्यवधान डाले बिना, सांस्कृतिक और पर्यटन संबंधी गतिविधियों में अवरोध पैदा किये बिना, किसी तरह नदी के संसाधनों का अति दोहन रोका जाए और संसाधनों का युक्तिसंगत प्रबंधन हो इसकी चर्चा इस सत्र में की जाएगी।

यात्रा के विविध मुकाम

सी–गंगा ने अस्तित्व में आने के बाद से लगातार नदी संरक्षण की दिशा में सक्रिय भागीदारी दर्ज की है। सी–गंगा आज नदी और जल संरक्षण में काम करने वाली लगभग सभी शासकीय एजेंसियों के मार्गदर्शक और नॉलेज पार्टनर की भूमिका निभा रहा है। इंडिया वॉटर इम्पैक्ट समिट में अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों की मौजूदगी सी–गंगा की सफल यात्रा की एक झलक मात्र है। जिसमें विभिन्न समझौता पत्रों पर हस्ताक्षर और साथ काम की करने की सहमतियां भी शामिल **हैं**। सी–गंगा ने हाल ही में **ब्रिटिश** वॉटर के साथ एक समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किये **हैं**, जिसके तहत ब्रिटिश वॉटर भारत के साथ मिलकर जलस्रोत और पर्यावरण संबंधी अधोसंरचनात्मक विकास के लिए काम करेंगे। इस तरह नार्वे के निबियो, नार्वेरियन इंस्टीट्यूट ऑफ बायोइकोनॉमी के साथ भी सी–गंगा ने एक समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किये **हैं**। जिसके मुताबिक निबियो सी–गंगा के साथ मिलकर कीचड़ प्रबंधन का मसौदा (फ्रेमवर्क) तैयार करेगा।